स्ट्रुमा ओवरी (Struma Ovari)

रोगी सूचना श्रृंखला - आपको क्या जानना चाहिए, आपको क्या पूछना चाहिए।

यह पत्रक आपको यह समझने में मदद करने के लिए है कि स्ट्रुमा ओवरी क्या है, यह कैसे होता है, आपको किन परीक्षणों की आवश्यकता है और निदान के दीर्घकालिक प्रभाव क्या हैं।

यह क्या है?

स्ट्रुमा ओवरी एक मोनोडर्मल टेराटोमा (जिसे डर्मोइड सिस्ट भी कहा जाता है) है जो मुख्य रूप से (50% से अधिक) मेच्योर थायरॉयड ऊतक से बना है। यह एक दुर्लभ स्थिति है, जो सभी डिम्बग्रंथि (अंडाशय) टेराटोमा का लगभग 3% और डिम्बग्रंथि ट्यूमर का 0.5% का प्रतिनिधित्व करती है। यह 40 से 60 वर्ष के बीच की महिलाओं को हो सकता है। ज्यादातर मामलों में स्ट्रुमा ओवरी एक साध्य स्थिति है, हालांकि लगभग 5% मामलों में यह घातक (कैंसर) हो सकता है और शरीर में फैला सकता है। यह आमतौर पर एक तरफ के डिम्बग्रंथि में होता है।

लक्षण क्या हैं?

स्ट्रूमा ओवारी के अधिकांश मामले लक्षणहीन होते हैं। इसके आकार के आधार पर, बाहरी दबाव के कारण पेट में दर्द, पेट फुलना , पेशाब , या आंत्र रोग हो सकता है। यदि अस्थायी थायराइड ऊतक कार्य कर रहा है (5-20% मामलों में), तो स्ट्रूमा ओवारी हाइपरथायरायडिज़म या थायरॉक्सिकोसिस का कारण बन सकती है, जिससे धड़कन, उच्च रक्तचाप, कंपन, चिंता, वजन घटाना और नींद न आने जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कुछ मामलों में, साध्य स्ट्रूमा ओवारी का उल्लेख पेट में पानी (असाइटिस) और प्लीउरा में पानी (प्लीउरल इफ्यूज़न) के साथ किया गया है, जिससे " सुडो मीग्स सिंड्रोम" कहा जाता है।

इसकी जांच कैसे की जा सकती है?

नियमित स्त्री रोग संबंधी जांच से इसका जल्दी पता लगाया जा सकता है, जिससे सर्जरी के बाद प्रजनन क्षमता को संरक्षित रखने की संभावना बढ़ जाती है। इसका पता लगाने और लक्षण जानने के लिए एक अंदरुनी (पैल्विक) अल्ट्रासाउंड आवश्यक है । सीटी स्कैन / एमआरआई का उपयोग एडवांस्ड स्टेज की बीमारी या मेटास्टेसिस जानने के लिए किया जा सकता है। लेकिन, यह ध्यान देने योग्य है कि स्ट्रूमा ओवारी का अस्पष्ट अल्ट्रसोनोग्राफिक विशेषताओ के आधार पर गलत निदान हो सकता है, और इससे कैंसर का संदेह को उत्पन्न कर सकता है।

हाइपरथायरॉइडिज़म के मामले में थायरॉइड ग्रंथि की जांच आवश्यक है ताकि प्राथमिक थायरॉइड डिसफंक्शन और एक्टोपिक थायरॉइड हार्मोन स्राव का पता लगाया जा सके। इन मामलों में आयोडीन सिंटीग्राफी द्वारा अंडाशय में ज्यादा आयोडीन ग्रहण करने का पता लगाया जा सकता है ।

इसका इलाज कैसे किया जा सकता है?

ऑपरेशन द्वारा स्ट्रुमा ओवेरी को निकालना इसका प्राथमिक इलाज है । ऑपरेशन मरीज की उम्र, बच्चा पैदा करने की क्षमता एवं इच्छा और कैंसर के संदेह के अनुसार किया जा सकता है।

रजोनिवृत्ति से पहले की महिलाओं (कम उम्र की महिलाओ) में, अंडाशय किस्सेक्टोमी एक उपयुक्त इलाज हो सकता है । अगर गाँठ बड़ा हो और स्वस्थ अंडाशय नहीं बचा हो तो अंडाशय निकाल देना चाहिए। रजोनिवृत्त (पोस्ट-मेनोपॉज) महिलाओं में, पूर्ण गर्भाशय निकालने के साथ दोनों अंडाशय तथा ट्यूब का निकालना भी मरीज

के साथ चर्चा का विकल्प हो सकता है। यदि इसका माप छोटा हो तो उस स्थिति में न्यूनतम इनवेसिव सर्जिकल प्रक्रिया का प्रयोग करके भी इन गाठो को निकाला जा सकता है ।

थायरोटोक्सिस के मामले में, सर्जिकल उपचार को थायराइड सामान्य होने तक स्थगित किया जा सकता है।

यदि हिस्टोपैथोलॉजी जांच में स्ट्रूमा ओवारी में कैंसर का अंश पाया जाता है तो उस स्थिति में तो अतिरिक्त उपचार जैसे कि इंट्रापेरिटोनियल स्टेजिंग, रेडियोआयोडीन उपचार और थायरोइडेक्टोमी की आवश्यकता हो सकती है।

मुझे किस प्रकार का फॉलो-अप (आगे की जांच)चाहिए?

क्योंकि अधिकांश स्ट्रूमा ओवेरी के मामले साध्य (बिनाइन) होते हैं, इसलिए कोई विशेष फॉलो-अप की आवश्यकता नहीं है। इसके रोकथाम के लिए नियमित स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा जांच की सलाह दी जाती है।

मुझे और क्या सवाल पूछने चाहिए ?

- क्या ऑपरेशन के बाद बीमारी फिर से हो सकती है?

Last updated 2024